देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के बी.एस–सी. प्रथम वर्ष प्राणीशास्त्र की पाठ्यचर्या का प्राध्यापकों की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों के आधार पर मूल्यांकन

मोनिका चौहान
विभाग बी0 एड0
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर

सारांश

शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसके बिना शिक्षा की प्रक्रिया नहीं चल सकती। शिक्षक बालक की योग्यता एवं क्षमताओं को विकसित करके उसकी रुचियों को जाग्रत करते हैं तथा उनमें नैतिक तथा सामाजिक गुणों का विकास करते हैं। अतः शिक्षक को राष्ट्र के विकास की कुंजी कहा गया है, वहीं पाठ्यक्रम में वे सब अनुभव सम्मिलित हैं, जिन्हें एक विद्यार्थी विद्यालय या महाविद्यालय में अर्थात् कक्षा, पुस्तकालय, क्रीड़ास्थल, साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक मंच पर प्राप्त करता है। पाठ्यचर्या का निर्माण तात्कालिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है।

मुख्य शब्द : प्राणीशास्त्र, समालोचनात्मक, प्रक्रिया, मइक्रोटीचिंग

प्रस्तावना

मूल्यांकन से तात्पर्य है कि शिक्षण प्रक्रिया तथा सीखने की क्रियाओं से उत्पन्न अनुभवों की उपयोगिता के बारे में निर्णय देना। मूल्यांकन हर क्षेत्र में लक्ष्य की दिशा एवं दूरी का पता लगाने में सहायता करता है, ताकि भविष्य के लिए सही दिशा निर्धारित की जा सके। कोई संस्था अपने उद्देश्यों की पूर्ति में कहाँ तक सफल हुई है उसके विद्यार्थी अपने पाठ्यचर्या से किस स्तर तक संतुष्ट है इसका ज्ञान मूल्यांकन द्वारा ही संभव है। (पाल एवं शर्मा, 2007)

औचित्यीकरण

पाठ्यचर्या को निरन्तर परिवर्तन किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या में परिवर्तन मूल्यांकन द्वारा ही संभव है। पाठ्यचर्या के क्षेत्र में अनेक शोध किये गए हैं, जो इस प्रकार हैं

कोहली (1974) ने अध्यापन शिक्षा पाठ्यक्रम का समालोचनात्मक मूल्यांकन किया, **माथुर** (1978) ने बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की गतिविधियों का मूल्यांकन किया, **पाल** (1981) ने माइक्रोटीचिंग पर शोध किया, **देवी** (1988) ने शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन किया, **मिश्रा** (1989) ने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया, **बेगम खटीजा** (1990) ने नवीन विज्ञान कार्यक्रम पर शोध अध्ययन किया, **डोके** (1994) ने एम.एड. स्तर पर शैक्षिक प्रशासन के पाठ्य विवरणों का मूल्यांकन किया, **सत्यार्थी** (2003) ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन किया।

विभिन्न शोध अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि विभिन्न संकायों की पाठ्यचर्या के मूल्यांकन पर शोध कार्य किये गए, परन्तु बी.एस–सी. प्रथम वर्ष प्राणीशास्त्र की पाठ्यचर्या का प्राध्यापकों की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों के आधार पर अब तक कोई मूल्यांकन नहीं हुआ है, इससे प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ''देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के बी. एस–सी. प्रथम वर्ष प्राणीशास्त्र की पाठ्यचर्या का प्राध्यापकों की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों के आधार पर मूल्यांकन करना था।

न्यादर्श

न्यादर्श हेतु इन्दौर शहर के होलकर विज्ञान महाविद्यालय, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातक महाविद्यालय, शासकीय जीजाबाई स्नातक महाविद्यालय के 40 प्राध्यापकों में से 25 प्राध्यापकों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु शोधिका द्वारा अध्यापकों हेतु निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया

प्रश्नावली में बंद (हाँ/नहीं) तथा मुक्त दोनों प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया था।

प्रदत्त संकलन

संबंधित प्राचार्य से अनुमति प्राप्त कर महाविद्यालय में जाकर प्राध्यापाकों से सम्पर्क किया गया, उन्हें अपने शोध प्रयोजन से अवगत करवाकर प्रश्नावली भरने हेतु अनुरोध किया। इस प्रकार 20 प्राध्यापकों से प्रश्नावली भरवायी गई।

प्रदत्त विश्लेषण

भरी हुई प्रश्नावलियाँ की अलग–अलग उत्तरों की आवृत्ति का योग कर उनका प्रतिशत ज्ञात कर तालिका 1 से 6 में प्रस्तुत किया गया है :

तालिका 1 में नवीन विषयवस्तु को शामिल किये जाने पर अध्यापाकों द्वारा पढ़ाए जाने के लिये प्रयुक्त सहायता के प्रकार को दर्शाया गया है।

तालिका–1

नवीन विषयवस्तु को शामिल किये जाने पर अध्यापकों के द्वारा पढ़ाये जाने के लिये प्रयुक्त सहायता के प्रकार कोदर्शाती तालिका

	पढ़ाये जाने के प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पुस्तकों का अध्ययन करके	12	60
2.	सन्दर्भ ग्रंथों, विश्वकोषों एवं शब्दकोषों की सहायता	07	35
3.	विशिष्ट प्राध्यापकों की सहायता	09	45

तालिका–1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत प्राध्यापक पुस्तकों का अध्ययन करके, 35 प्रतिशत प्राध्यापक सन्दर्भ ग्रंथों, विश्वकोषों एवं शब्दकोषों की सहायता लेते हैं तथा 45 प्रतिशत प्राध्यापक विशिष्ट प्राध्यापकों की सहायता लेते हैं।

इसके संभावित कारण हो सकते हैं–नवीन विषयवस्तु शामिल किये जाने पर प्राध्यापक पहले विशिष्ट प्राध्यापकों की सहातय लेते हैं, किन्तु विशिष्ट प्राध्यापक उपलब्ध न होने पर पुस्तकों का अध्ययन किया जाता है एवं विश्वकोषों एवं शब्दकोषों की सहायता ली जाती है तथा प्राध्यापक सन्दर्भ ग्रंथों की सहायता से संकल्पना समझाते हैं।

तालिका–2 में प्राध्यापकों द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली शिक्षण विधियों को दर्शाया गया है।

तालिका – 2

प्राध्यापकों द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली शिक्षण विधियों को दर्शाती तालिका

–	शिक्षण विधियाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	प्रदर्शन	06	0
2.	व्याख्यान	20	100
3.	परिचर्या	03	15
4.	सेमीनार	04	20

तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राध्यापक 30 प्रतिशत प्रदर्शन विधि, 100 प्रतिशत व्याख्यान विधि, 15 प्रतिशत परिचर्या एवं 20 प्रतिशत सेमीनार विधि का उपयोग करते हैं।

इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि सभी प्राध्यापक व्याख्यान विधि का उपयोग इसलिए करते हैं कि महाविद्यालयों में चार्ट्स एवं मॉडल आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाते हैं एवं कई प्राध्यापकों को प्रोजेक्टर का उपयोग उचित तरीके से नहीं कर पाते तथा कई महाविद्यालयों में परिचर्या एवं सेमीनार में छात्रों द्वारा उपस्थिति कम पायी जाने के कारण शिक्षक आयोजित नहीं करते हैं।

तालिका–3 में अध्यापकों के द्वारा उपयोग की जाने वाली सन्दर्भ पुस्तकें के नामों को दर्शाया गया है।

तालिका–3

प्राध्यापकों द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली सन्दर्भ पुस्तकों को दर्शाती तालिका

–	सन्दर्भ पुस्तकें	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	बी.के. तिवारी	17	85
2.	वीरबाला रस्तोगी	16	80
3.	बैनल	12	60
4.	सक्सेना	14	70
5.	वर्मा	11	55
6.	ओ.पी. अग्रवाल	09	45

तालिका–3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 85 प्रतिशत प्राध्यापक वी.के. तिवारी, 80 प्रतिशत वीरबाला रस्तोगी, 60 प्रतिशत बैनल, 70 प्रतिशत सक्सेना, 55 प्रतिशत वर्मा तथा 45 प्रतिशत ओ.पी. अग्रवाल की पुस्तकों का उपयोग करके अध्यापन करते हैं।

इसके संभावित कारण ये हो सकते हैं कि बी.के. तिवारी तथा वीरबाला रस्तोगी लेखकों की पुस्तक में पाठ्यक्रम का ज्यादातर भाग मिल जाता होगा तथा स्पष्ट संकल्पना होगी तथा बैनल, सक्सेना, वर्मा तथा ओ.पी. अग्रवाल की पुस्तकों में पाठ्यक्रम का कम ही भाग मौजूद है एवं ये पुस्तकें आसानी से उपलब्ध नहीं होती हैं।

तालिका–4 में अध्यापन को प्रभावी बनाने हेतु उपयोग की जाने वाली तकनीकों को दर्शाया गया है।

तालिका–4

अध्यापन को प्रभावी बनाने हेतु उपयोग की जाने वाली तकनीकों को दर्शाती तालिका

–	तकनीक	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	ओव्हर हेड प्रोजेक्टर (ओ.एच.पी.)	09	45
2.	चार्ट	16	80
3.	मॉडल	14	70

तालिका–4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 45 प्रतिशत प्राध्यापक ओव्हर हेड प्रोजेक्टर (ओ.एच.पी.) का उपयोग करते हैं, 80 प्रतिशत चार्ट्स तथा 70 प्रतिशत मॉडल का उपयोग करके पढ़ाते हैं।

इसके संभावित कारण इस प्रकार हो सकते हैं कि इन तकनीकों का उपयोग करने से विषयवस्तु स्पष्ट समझ में आ जाती है और प्राध्यापकों को अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता, परन्तु चार्ट एवं मॉडल आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं एवं इनके उपयोग करने में आसानी भी होती है। अतः इनका प्रतिशत अधिक है, परन्तु ओ.एच.पी. सभी महाविद्यालयों में आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाते हैं, अतः इनका प्रतिशत कम है।

तालिका–5 में सेमेस्टर पद्धति के पक्ष में होने के कारणों को दर्शाया गया है।

तालिका–5
सेमेस्टर पद्धति के पक्ष में होने के कारणों को दर्शाती तालिका

–	सेमेस्टर पद्धति के पक्ष के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	विषय का अधिक भार नहीं रहता।	06	19
2.	विद्यार्थी सतत् अध्ययनरत रहते हैं।	08	26
3.	अध्ययन सरल हो जाता है।	05	16
4.	विद्यार्थी की उपस्थिति बनी रहती है।	12	39
	योग	**31**	**100**

तालिका – 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 19 प्रतिशत के अनुसार विद्यार्थियों पर विषय का अधिक भार नहीं रहता। 26 प्रतिशत के अनुसार विद्यार्थी सतत् अध्ययनरत रहते हैं। 16 प्रतिशत के अनुसार अध्ययन सरल हो जाता है तथा 39 प्रतिशत के अनुसार विद्यार्थियों की उपस्थिति बनी रहती है।

इसके संभावित करण ये हो सकते हैं कि इस सेमेस्टर पद्धति में सत्र के मध्य में हर माह टेस्ट होते रहते हैं जिससे विद्यार्थियों द्वारा प्रकरणों का पुनरावृत्ति होती है एवं उन्हें प्रकरण याद हो जाता है एवं परीक्षण के द्वारा यह भी पता चल जाता है कि विद्यार्थियों का प्रकरण कितना समझ आया। विद्यार्थियों के द्वारा अच्छे अंक प्राप्त करने की संभावनाएँ बढ़ जाती है।

तालिका–6 में अध्यापन कार्य को प्रभावी बनाने हेतु गतिविधियों को दर्शाया गया है।

तालिका–6
अध्यापन कार्य को प्रभावी बनाने हेतु गतिविधियों को दर्शाती तालिका

क्रमांक	गतिविधियाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पुनश्चर्या कार्यक्रम	00	00
2.	उन्मुखीकरण कार्यक्रम	00	00

तालिका–6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कक्षा में इन गतिविधियों को नहीं अपनाया जाता है।

इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि अध्यापक परिश्रम से बचना चाहते हैं, अध्यापकों को इन कार्यक्रमों का महत्व नहीं पता, अध्यापक समय नहीं देना चाहते हैं। महाविद्यालय प्रशासन इन कार्यों पर धन खर्च नहीं करना चाहते हैं। इन कार्यक्रमों को करने में अध्यापकों को अरुचिकर व्यवहार।

निष्कर्ष

प्राध्यापकों के सुझावों से संबंधित निष्कर्ष इस प्रकार है

1. नवीन विषयवस्तु पाठ्यचर्या में शामिल किये जाने पर प्राध्यापकों के द्वारा पुस्तकों का अध्ययन करके, सन्दर्भ ग्रंथों, विश्वकोषों एवं शब्दकोषों की सहायता तथा विशिष्ट प्राध्यापकों की सहायता से अध्यापन करवाया जाना पाया गया।
2. प्राध्यापक मॉडल चार्ट्स, प्रोजेक्टर, लेक्चर, परिचर्या, सेमीनार तथा ब्लेक बोर्ड लेखन इन शिक्षण विधियों का उपयोग करते पाए गए।
3. अध्यापकों के मतानुसार बी.के. तिवारी, वीरबाला रस्तोगी, बैनल, सक्सेना, वर्मा एवं ओ.पी. अग्रवाल की पुस्तकों का उपयोग होना पाया गया।
4. अध्यापन को प्रभावी बनाने के लिये प्राध्यापक ओव्हर हेड प्रोजेक्टर (ओ.एच.पी.), चार्ट तथा मॉडल का उपयोग करते पाए गए।
5. सेमेस्टर पद्धति में विषय का अधिक भार नहीं रहता है, विद्यार्थी सतत् अध्ययनरत् रहते हैं, अध्ययन सरल हो जाता है। विद्यार्थी की उपस्थिति बनी रहती है इस कारण प्राध्यापक सेमेस्टर पद्धति के पक्ष में पाये गये।
6. अध्यापन कार्य को प्रभावी बनाने हेतु महाविद्यालयों में पुनश्चर्या तथा उन्मुखीकरण कार्यक्रमों को नहीं करवाया जाना पाया गया।

संदर्भ

1. अग्रवाल, वी.के. एवं अवस्थी, जे.के. (2011); शिवलाल जीवविज्ञान, इन्दौर, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, पुस्तक प्रकाशन, खजुरी बाजार।
2. पाल, एच.आर. एवं पाल, आर. (2006); पाठ्यचर्या कल आज और कल, नई दिल्ली, क्षिप्रा प्रकाशन।
3. पाल, एच.आर. (1988); पाठ्यचर्या आधार एवं सिद्धान्त, इन्दौर, स्कालर्स पब्लिशिंग हाऊस।
4. पाल, एच.आर. एवं तिवारी, एस. (1992); बी.एड. पाठ्यचर्या का प्रशिक्षणार्थियों द्वारा मूल्यांकन, नई दिल्ली, भारतीय आधुनिक शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्।
5. पाल, एच.आर. एवं शर्मा, एम. (2009); मापन, आकलन एवं मूल्यांकन, इन्दौर, क्षिप्रा प्रकाशन।
6. शर्मा, आर.ए. (1997); पाठ्यक्रम विकास, मेरठ, ईगल बुक्स इन्टरनेशनल।
7. शर्मा, ए.आर. एवं शर्मा, सुधा (2001); शैक्षिक प्रौद्योगिकी के मूल आधार, आगरा, आगरा साहित्य प्रकाशन।
8. यादव, सियाराम (1996); पाठ्यक्रम विकास, कोटद्वार (गढ़वाल), विनोद पुस्तक मंदिर।
9. सत्यार्थी, सत्येन्द्र (2003); प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण के शैक्षिक कार्यक्रमों का शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों द्वारा मूल्यांकन, इन्दौर, अप्रकाशित एम. एड. शोध प्रबन्ध (शिक्षा), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय।
10. तिवारी, राजेश (2008); समाजशास्त्र की पाठ्यचर्या का विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों के प्रत्यक्षण के आधार पर मूल्यांकन, इन्दौर अप्रकाशित एम.एड. शोध प्रबन्ध (शिक्षा), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय।
11. Arora, Deepak (2004); Dictionary of Science, Delhi, A IIBS Publishers.
12. Buch, M.B. (1974); A Survey of Research in Education, Baroda, Centre of Advanced Study in Education.
13. Buch, M.B. (1979); Second Survey of Research in Education, Baroda, Society for Education Research & Development.
14. Buch, M.B. (1986); Third Survey of Research in Education, Baroda, Societyfor Education Research & Development.
15. Buch, M.B. (ed.) (1991); Forth Survey of Research in Education, New Delhi,Vol.I&Vol. II.

16. National Council of Education Research & Training, 1991.
17. NCERT Fifth Survey of Research in Education (1997); New Delhi, Trends Reports Vol. I, National Council of Educational Research & Training. (1993-2000).
18. NCERT Sixth Survey of Education Research (2000); New Delhi, Vol. I, National Council of Educational Research & Training.
19. NCERT Sixth Survey of Education Research (2007); New Delhi, Vol. II, National Council of Educational Research & Training, 2007.

Offer for Sponsorship of First Information Broucher of Seminars

Terms & Conditions

As you know, S.R.F. is working in the field of higher education. To improve the quality of education & to promote its goal, S.R.F. has decided to sponsor the first information brochure (multicolor) of the seminar organized by the college/departments, if they are currently subscriber of the journals published by S.R.F.

If your college /department have not taken annual subscription of journals till date, please subscribe the above to facilitate the offer. (Subscription form is attached).

Eligibility

If your college/department is already an annual subscriber of our journals, you may apply for the sponsorship.

In case of college subscription, only one sponsorship will be given during the year for the seminar/workshop going to be organized either by college or by any department.

In case of department subscription any department of the college who has taken yearly subscription of journals, may apply individually.

How to apply

Please send request in given format duly signed by the Principal (in case of college subscription) or HOD (In case of departmental subscription).

How to design Brochure

Please send softcopy of brochure after design it on A4 size in multicolor concept in attached format in coral draw-13. Also, you will have to ensure that one leaf of brochure is reserved for advertisement of S.R.F.

What you have to do

- Be ensure that your college or department has taken subscription for current year, if not, you may recommend becoming the subscriber of our journals.
- In case of college subscription ensure that no other department of college has already send request for the sponsorship against this subscription.
- Please send duly signed request in our format for our final consideration.
- After our confirmation, please design the brochure with our advertisement and send it in softcopy after carefully proof reading.
- We will dispatch you the printed brochure on your dispatch cost.